अध्याय पाँचवा

"भूमिजा" में शिल्पविधान

अध्याय पाँचवा

"भूमिजा" में शिल्पविधान

किसी भी कृति में उसके कथ्य का विषय के साथ ही उसके रूप और शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो आधुनिक काल अधिक सजग एवं क्रांतिकारी युग कहा जायेगा। इसी काल में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नये अन्वेषण हुए हैं। विषय और शिल्प की दृष्टि से आधुनिक साहित्य भरा पडा है। गद्य और पद्य दोनों प्रकार के साहित्य में यह युग अनेक प्रकार की नवीनताओं का जनक है। काव्य शिल्प की दृष्टि से भी इसे क्रांतिकारी युग कहा जा सकता है।

भावपक्ष और कलापक्ष के संयोग से ही रचना का सौंदर्य अधिक बढता है। काव्य के स्वरूप परिवर्तन के साथ-साथ अभिव्यंजना की पध्दति भी बदल जाती है। खंडकाव्य की दृष्टि से शिल्पविधान में भाषा, प्रतीक योजना, अलंकार योजना, छंद योजना इन बातों का विचार किया जाता है। खंडकाव्य की भाषा, सरल प्रवाही, अर्थगर्भित ओर प्रसंगानुकुल होनी चाहिए। खंडकाव्य का विषय ऐतिहासिक पौराणिक, काल्पनिक भी हो सकता है। कवि इन विषयों के आधारपर आधुनिक समस्याओं को स्पष्ट करने के लिए प्रतीकोंकी योजना करता है। काव्य की अभिव्यक्ति शैली स्पष्ट तथा प्रभावशाली होने के लिए वह उचित अलंकारो का प्रयोग करता है। साथ ही कथा में प्रभावात्मकता तथा सु-सम्बधता लाने के लिए छंद तथा सर्गो योजना करता हैं। इन सभी तत्वों के उचित संयोग से ही खंडकाव्य की अभिव्यक्ति सशक्त बनती है। इन्ही तत्वों के आधारपर हम प्रस्तुत अध्याय में कविवर नागार्जुनजी की विख्यात काव्य-कृति "भूमिजा" के शिलपविधान की समीक्षा करेंगे।

1· **भाषा :-**

भाषा वह सेतू है, जिसमें एक व्यक्ति का भाव-विचार, अनुभव दुसरों तक पहुँचता हैं। जब तक कवि की भाषा इस सेतुत्व गुण से युक्त रहती है, तब तक वह सार्थक और अपरिहार्य प्रतीत होती है। काव्य शिल्प के उपादानों में प्राथमिक उपकरण भाषा है। भाषा, अभिव्यक्ति की प्राण शक्ति का दूसरा नाम है। अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम भाषा है, जिसके द्वारा कवि अपने विचारों और भावों को अपने पाठकों के पास पहुँचता है।

खंडकाव्य में भाषा तत्व महत्वपूर्ण है। भाषा के लिए यह बात आवश्यक है कि वह भावानुकूल हो। गंभीर विचारो के लिए भाषा का रूप गंभोर होना चाहिए तथा सीधे-साधें स्पष्ट विचारों के लिए सरल और व्यावहारिक भाषा का प्रयोग होना चाहिए। सुंदर शेलो के लिए सबसे आवश्यक बात शब्दों के उचित प्रयोग और वाक्य विन्यास की है, और वह व्याकरण की दृष्टिसे शुध्द परिष्कृत और परिमार्जित होनी चाहिए। यदि भाषा में व्याकरण की अशुध्दता होगी, शब्दों का गलत प्रयोग होगा, वाक्यरचना अव्यवस्थित होगी, तो ऐसी भाषा से काव्य प्रभावात्मक नहीं होगा। अत एवं काव्य में भाषा की निर्विवाद रूपसे अपनी महत्ता है और कविता के प्राण, भाव हैं। काव्य की कलात्मकता, आकर्षकता, संपन्नता, प्रभाविष्णुता, संप्रेषणीयता, एवं उसके भाव तथा गांभीर्य की शक्ति भाषा द्वारा सिध्द होती है।

इस दृष्टि से नागार्जुनजी की काव्यकृति "भूमिजा" के भाषा सौंदर्य का मूल्यांकन करते समय उनकी शब्द योजना का ही परिचय करना उचित होगा। कविवर नागार्जुनजी की काव्य भाषा खडीबोली है।जो संस्कृत निष्ठ है। संस्कृत के प्रति कवि का रूझाव अधिक होने के कारण संस्कृत के शब्द रत्नों से अपनी भाषा पूंजी में वृध्दि की हैं। कविने अपने काव्य में संस्कृत तथा हिंदी की आधुनिक बोलियों में प्रयुक्त होनेवाले आँचलिक शब्दों का भी प्रयोग किया है। उन्होंने अपने खंडकाव्य में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ ही अपने संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग

किया है। जो हिंदी में अधिक प्रचलित नहीं है। जैंसे -

गुल्म[1], परमललाम[2], सजल स्निग्ध[3], नासापुट[4], विनिःसृत[5], मज्जन[6], अंक[7], पाणियुग[8], कर्दम[9], खुरकंटक[10], सितपट[11], अयोनिज[12], व्यालू[13], अशुचिपूर्ति[14], विप्रकुल[15], भू लुंठित[16], केयूरवलय[17], यातुधान[18], पुश्चोल[19], क्रय कीत[20], श्मश्रू[21], जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। उसी तरह अनेक तद्भव और आँचलिक शब्द भी दृष्टिगोचर होते है। जैसे ...... आचमन[22], दरस-परस[23], फेनिल जलराशि[24], यक्ष्मा[26], हलधर[27], कोंठ करेज[25] उत्तरीय[28], वल्कल[29], भुजंग[30], हिरणौटा[31] आदि।

इसके अलावा कुछ सामाजिक शब्दों का प्रयोग भी दिखाई देता है, जैसे ,,, मर्मात्निक[32], श्वास क्रम दीर्घ[33], कपिल-कोप-परिदग्ध[34], संपुटित-प्रणतशोश-संलग्न[35], सुचोर-समीहित[36], स्मरशरविग्ध[37], मधुमितभाषी [38], कूर्चधवलित[39] आदि·

नागार्जुनजी ने "भूमिजा" में कुछ मराठी शब्दों का भी प्रयोग किया है। जो उनकी काव्यकृति को अधिक शोभा देता है। जैसे ....

किंवा[40], आख्यान[41], संकेत[42], निस्तेज[43], निःशब्द[44], आरूढ[45], निवृत[46], हतप्रभ[47], आदि। इसके साथ-साथ एखाद दुसरा शब्द ज्योतिषसंबंधी भी दिखाई देता है। जैसे ,,, नक्षत्र खचित[48], राहुग्रस्त[49] आदि। इस तरह नागार्जुन के खंडकाव्य "भूमिजा" में खडीबोली का रूप पूर्णतः संस्कृतनिष्ठ है। कही-कही उसका रूप बहुत ही अधिक दुरूह जान पडता है। उदा· निम्न पंक्तियाँ देखिये·

"श्मश्रु कूर्च-धवलित, स्थावर मनुरूप
चर्मसार, अतिवृध्द, प्रलंबित गात्र
भू पर खड़ा ज्यो संज्ञाशून्य" [50]

इसप्रकार नागार्जुनजी की भाषा में एक संस्कृत की गुढ तत्सम शब्दावली का प्रयोग है। कहींपर उन्होंने मराठो एवं आँचलिक शब्दों का प्रयोग कर अपनो

काव्यकृति को भावानुकूल बनाया है, जिसे पढकर वाचक स्वयं भावाविभोर हो जाते है और यही इस काव्यकृति की भाषिक सफलता का पता चल जाता है। उपर्युक्त विवेचन के आधारपर हमें नागार्जुनजी के "भूमिजा" इस प्रबंधकाव्य में निम्नलिखित काव्यभाषा की विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती है··

1· **भाषा की लाघवता :-**

"भूमिजा" की भाषा समासांत प्रधान और विभक्ति रहित है। उसमें लाघव का गुण कूट-कूट कर भरा है। थोडे शब्दो में उन्होंने बहुत कुछ कहा है जैसे -

"भूमि से निकले, समाएँगे वहीं
और भला जाएँगे हम क्या कहीं
वही है माता, बस वही है पिता
वही है आसान, वही है चिता।"[51]

उपर्युक्त पंक्तियाँ पढ़कर पता चलता है कि सीता ने अपना भविष्य एवं अतित किस तरह अभिव्यक्त किया है। कहीं पर तो कविवर ने अत्यल्प शब्दों में विशाल भावों की सृष्टि की है। उदा ···

"सूनी - सूनी तमसा की तट भूमि··
महाकाल का निर्मम क्रीडा क्षेत्र··
आज हुआ था रामकथा का अन्त।
खडे रह गए सारी रात महर्षि···।"[52]

2· **माधुर्य और प्रसाद गुण से ओतप्रोत :-**

माधुर्य और प्रसाद गुण नागार्जुन की पंक्तियों में सहज रूप से आ जाते है। लगता है जैसे कबीर-मीरा की प्रसादयुक्त मधुर शैली का गंगा-जमुनी संयोग हो गया है। उनकी भाषा में जो शक्ति और वेग हैं वह उनके काव्य की

अपनी विशेषता हैं। जैसे ...

सीता के भूमि में समा जाने के बाद महाकवि वाल्मीकि अपनी कुटिया के बाहर शोक में डूबे खोये-खोये से कहते हैं -

"मातृ-कुक्षि में समा गई हो पुत्रि
करो वहीं पर निर्विकल्प विश्राम
सुनकर शायद दुखी न होंगे राम
होगा लक्ष्मण को भारी परिताप
लव-कुश वापस जायेंगे साकेत।"[53]

सत्य तो यह है कि नागार्जुनजी की इस भाषा शैली में इस्पात की लचक नहीं है किंतु मृणाल तंतुओ की कमनीयता जरूर है।

3. **भावानुकूल भाषा :-**

"भूमिजा" की सबसे बडी विशेषता यह है कि नागार्जुनजी ने भावों के अनुरूप भाषा के स्वरूप को गठा है। कहीं उसमें ओजस्विता है, कही कोमलता है, तो कहीं कठोरता है। यहाँ मुनि गौतम की भाषा में बडी कठोरता है, तो अहल्या का स्वर बडा की करूणामयी हैं। मुनि गौतम के हृदय का आवेश और आक्रोश इन पंक्तियों में स्पष्ट होता है...

"निर्लज्जे, धिक्कार।
रखकर पति की छाती पर जो लात
लेती है परसंगति का आस्वाद
उससे तो वेश्या ही है उत्कृष्ट ...।"[54]

इसी तरह सीता के निम्नलिखित कथन में भाषा का रूप मर्मस्पर्शी, सहज और स्वाभाविक है। जैसे -

"लाख बतायें भी ये लोग
न होगी त इनकी सन्तान
भूमि-पुत्री है तू साक्षात्
वहाँ, बचपन में दसियों बार
बताया था धाई ने मुझे।"[55]

कविवर नागार्जुनजी का भाषापर पूर्ण अधिकार होने से वे गहन भावों और सूक्ष्म विचारों के सक्षमता के साथ अभिव्यक्त करने में सफुल हुए है। उन्होंने अपने भावों की अभिव्यक्ति सहज सुलभता के साथ की हैं। कहीं भी उसका रूप अस्पष्ट नहीं है। कवि ने कही भी भाषा को गठनेका, सजाने का प्रयास नहीं किया है।

4· **छंद योजना :-**

छंद के मामले में आधुनिक युग के कवि जहाँ उदासीन नजर आते हैं और मुक्त छन्द के नामपर गद्य को ही कविता की तरह लिख रहे हैं, वहीं नागार्जुनने परंपरागत छन्दो को ठेठ मुहावरेदार शैली में लिखकर लोकप्रिय बनाया है। जैसे -

"हाथ से छू करके दोनों कान
दाँतो तले दबा कर सहसा जोभ
कहा राम ने :
कहतो हो क्या देवी।
जाउँगा मैं भला तुम्ही को भूल?"[56]

मुक्त छंदों के भावानुरूप छोटे-बडे चरणों को नागार्जुनने लयविहीन नहीं होने दिया है। वे मुक्त छंदो को भाव गुम्फित एवं लय गुम्फित होना अनिवार्य मानते है। जैसे -

"याद आ रहे मुझको बारंवार,
वृध्द पिता के सजल स्निग्ध वे नेत्र।

शिशिर निशा के हिमाच्छन शशितुल्य
मातांओं के मुँह आते हैं याद।"[57]

नागार्जुन को अप्रचलित छन्द "बरबै" प्रिय रहा है। इस मात्रिक अर्ध समछन्द के विषम चरण में बारह एवं समचरणों में सात मात्राएँ होती है। समचरणों के अन्त में यगण ॥ऽ। या तगण ऽऽ। आने से मिठास बढती है। यथा-

बीहड पथ के चारण / ब्रज कठोर।

ये निसर्ग प्रिय श्यामल / युगल किशोर।[58]

"भूमिजा" में कहीं कहीं 16 मात्राओं के मात्रिक छन्द का प्रयोग हुआ हैं। इसमें भी रचनाकार ने तुक के मामलें में चौपाई के नियम तोड़कर स्वतंत्रता से काम लिया है।

भाषा में कविता के माध्यम से एक निश्चित गति प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य छंद करते है। नागार्जुन भी छंदो की सहायता से काव्य को एक निश्चित गति देने में सफल रहे हैं। इसप्रकार संस्कृत निष्ठ कोमलकांत पदावली छंदो का गठन आदि का सहज चित्रण नागार्जुन के प्रकृति काव्य में उपलब्ध है।

3· **अलंकार योजना :-**

अलंकार, काव्य का अनिवार्य तत्व हैं। कवि अपने हृदय में उमडनेवाले भावों को व्यक्त करता है। अपनी इस अभिव्यक्ति को अधिक रोचक, सुंदर तथा आकर्षक बनाना चाहता है। वास्तव में काव्य की सौंदर्य वृध्दि के लिए अलंकारो का होना अनिवार्य है। भाषा तथा शैली को मनोरम तथा भावों को विहंगम बनाने के लिए आधुनिक कवियों ने अपने काव्य में आवश्यक अलंकारों का प्रयोग किया है। वास्तव में अलंकार वाणी के आभूषण है। अलंकारो की सहायता से अभिव्यक्ति

में स्पष्टता, भावों में प्रभाविष्णूता और प्रेषणीयता तथा भाषा में सौंदर्य का संपादन होता है। अलंकार की इसी महिमा को ध्यान में रखकर नागार्जुन ने अपने "भूमिजा" खंडकाव्य को अलंकारो से विधिवत् सजातया है।

नागार्जुन जानबुझकर अलंकार गढ़ने में विश्वास नहीं करते। स्वाभाविक रूप से उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलंकारो के मनोहारी प्रयोग यहाँ हुआ हैं। इसके साथ-साथ प्रतीक, अन्योक्ति, यमक, श्लेष आदि अलंकारों का सहज सुंदर प्रयोग भी किया है।

उदा.

"डालो से लिपटी थी मोटी बेल,
मानो अजगर दिखा रहें हो खेल।
क्षुद्र झींगरो की अविरल झँझकरा
रही विधाता को माने ललकार।"[59]

इसी तरह -

"कोटि कोटि नक्षत्र खचित आकाश,
अमित नेत्रमय, मानो श्याम शरीर --
लगे घूमने होकर परम अशंक
भूत, प्रेत, राक्षस, रजनीचर जन्तु।"[60]

कई जगहपर स्वाभाविक रूप से रूपक अलंकार आये है। जैसे -

"लगता है मुख राहू ग्रस्त शशि तुल्य
क्लेशांकित वे बुझे-बुझे से नेत्र
तुहिन दग्ध कुवलय होते है , ओह।"[61]

इसप्रकार कवि ने "भूमिजा" में अलंकारो का सहजता से प्रयोग किया है कि लगता है प्रस्तुत कृति में अलंकार बिना बुलाए ही आ गए है।

4· **मुहावरो और लोकोक्ति का प्रयोग :-**

लोकोक्ति और मुहावरों का प्रयोग "भूमिजा" में नागार्जुन ने पर्याप्त किया है। कवि के दारा प्रयुक्त लोकोक्तियाँ और मुहावरे बिल्कुल मौलिक है। इनके प्रयोग के दारा कवि ने पारंपारिक भाषा प्रतिमान को एक नया सौंदर्यशास्त्र दिया है।

लोकोक्ति एवं मुहावरें भाषा के प्राण होते हैं, इनसे न केवल भाषा के अर्थ-गौरव की सृष्टि होती है, अपितु इनसे उक्ति-वैचित्र्य का चमत्कार उत्पन्न होकर कथन में प्रभावोत्पादकता आ जाती है। कविवर नागार्जुनजी ने अपनी भूमिजा कृतिमें लोकोक्ति एवं मुहावरों दारा विलक्षण उक्ति चमत्कार एवं अर्थ सौष्ठव की सृष्टि की है।

"भूमिजा" में नागार्जुन ने पुराने मुहावरों और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है। उनके नये मुहावरों में भावों का स्पंदन है, हृदय की धडकन है और नये शिल्प की भंगिमा है। जैसे तिल तिल बढना, धीरज का बाँध टूटना, मन में टीस भरना, झपकी लेना, महामूक होना, टहलना, दंग होना, ताकने लगना, कोढ़ करेज टूटना, छाती से लगाना आदि ।

अ· "मध्यान्होतर भोजन के पश्चात-
किसकी झिपती नहीं, बताओ आँख?"[62]

आ· "देश-काल के और पात्र के तथ्य,
सुन-सुन यद्यपि नानाविध आख्यान ,
तिल-तिल करके बढ़ता जाता ज्ञान।"[63]

इ· "लगा टूटने जब धीरज का बाँध,
शतदल नीलकमल पर से जलबिंदू
ढुलक पडे दो बार श्वास क्रम दीर्घ
नासापुट कम्पित निस्तेज कपोल।"[64]

ई· "मुनि को देख विलंब गए कुछ दूर
लगे टहलने तट पर राजकुमार।"[65]

ड· "कहो तात, फिर इसमें किसका दोष?
सह न सकी मैं मुनि का यह आक्षेप,
लगा टूटने रह-रह कोंठ-करेज
फिर भी किया नहीं मैने प्रतिवाद।"[66]

ए· "भूमिसूता का सात्विक अन्तर्धान
बार-बार भरता था मन में टीस
खडे रह गए सारी रात महर्षि।"[67]

5· **शैली के रूप :-**

शैली दृष्टि से सभी हमें "भूमिजा" में निम्नरूप देखने को मिलते है। -

1· भावात्मक शैली :-

काव्य की यह प्रतिनिधि शैली है। पात्रों के हृदय उद्‌गारो का आवेश इसी शैली में भली भाँति प्रकट होता है। इस शैली की भाषा ओजस्वी, स्फूर्तिदायक ओर प्रवाहपूर्ण होती है। नागार्जुनजी ने करूण और रौद्र रस की व्यंजना में भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। इस सन्दर्भ में सीता का यह कथन दृष्टव्य है -

"प्रमाणित क्या करना है मुझे?
पावनता अपनी? अपना शील?
प्रमाणित क्या करना है मुझे?
गुहय शुचिता? चारित्रिक ओज?
हाय रे राज। हाय री नीति।

हाय रे रूढिबध्द जन भीति।

हाय रे पुरुष। हाय रे दंभ।

हाय रे एकपक्षीय वह न्याय।"[68]

उपर्युक्त पंक्तियों में सीता ने रघुकुल रीति, न्याय एवं राजा को भी फटकारा है। मानो सीता के हृदय की जलन ही अभिव्यक्त हुअी है।

उसीप्रकार अहल्या का निम्न कथन करूण रस से ओतप्रोत है।..

"सह न सकी मैं मुनि का यह आक्षेप,

लगा टूटने रह-रह कोंठ करेज

फिर भी किया नहीं मैंने प्रतिवाद,

रोष गरल की भाँति हो गया व्याप्त,

प्रबल ताप से लहू बन गया बर्फ,

ऐंठी जिव्हा, वाक्य हो गये बन्द -

चेष्टाएँ भी सह न सकी अनिरूध्द

धराशायिनो बनी, वत्स मैं हंत"[69]

इस तरह "भूमिजा" में कवि ने भावात्मक शेली का उचित प्रयोग किया है।

2· <u>अलंकारिक शैली :-</u>

काव्य की रस व्यंजना को अधिक तीव्र और प्रभावोत्पादक बनाने के लिए संवादो की भावात्मक शैली ही अलंकारिक शैली का रूप लेकर प्रयुक्त हुअी है। इस शैली में उपमा अलंकार की छटा दिखाई देती है। जैसे -

"आम्र वृक्ष की छाया में आसीन

मुनि गौतम थे ध्यान-मग्न ज्यों मीन

पडा हुआ हो निद्रा सुख में लीन

पुष्करिणी के बीच, अचल निश्चेष्टा।"[70]

अलंकारिक शैली का काफी प्रयोग इस काव्य में मिलता है।

3· चित्रात्मक शैली :-

कविने एक कुशल चित्रकार की भाँति चित्रात्मक शैलीद्वारा थोडे से शब्द तथा संकेतोद्वारा वातावरण, पात्रों के कार्यलाप को मूर्तिमान किया है। इस दृष्टिसे निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य है -

"कहा राम ने लक्ष्मण से - "प्रिय वत्स,
ऊपर देखो, नभ है कैसा स्वच्छ?
नीरज नील निरभ्र परम रमणीय-
ज्यों हो शरद प्रकृति का विजय-वितान
सडी घास की, सडे पात की गन्ध,
अधसूखे कर्दम की गीली वास,
ध्यान खींच लाती है भू पर ओह।"[71]

इसप्रकार कवि नागार्जुन ने अपने काव्य में चित्रात्मक शैली का प्रयोग सफलता से किया है।

4· वक्तात्मक शैली :-

काव्य की यह शैली बडी बलवती होती है। इस शैली में कोई वक्ता भावावेश के साथ वक्तव्य ही दे रहा है, ऐसा लगता है।

"भूमिजा" की निम्नपंक्तियों में भावात्मक शैली का प्रयोग सफल रूप में दिखाई देता है। जैसे -

"कौन देव, तुम मेरे हृदयाधार
असुर क्रुर, तो सुर होते हैं धूर्त,
क्षणमति होते किन्नर औ गन्धर्व,
दुर्विदग्ध संशयी, हृदय से हीन

होता मानव तुम हो उससे भिन्न।
धन्वन्तरि का कर - पल्लव - संस्पर्श
सुनती हूँ, करता अमरत्व प्रदान
घनश्याम, बतलाओ, तुम हो कौन?
पाषाणी में डाल दिये हैं प्राण।"[72]

वक्तात्मक शैली में नागार्जुनजी ने एक ही भाव को अनेक पंक्तियों मे दुहराकर भावव्यंजना को बल दिया है।

4. परिचयात्मक शैली :-

विषय के सीधे-सादे प्रतिपादन में परिचयात्मक शैली का प्रयोग होता है। जहाँ भाव तथा विषय की दृष्टि से अभिव्यंजना का विशेष महत्व नहीं है, वहाँ इस शैली का विधान कविने दिया है। जैसे -

"कहने लगे महर्षि शान्त गंभीर -
सुनो दाशरथि इस वन का वृत्तांत -
महाविकट राक्षसी-ताड़का एक,
दस हजार हाथी की जिसमें शक्ति।
इस वन पर है उसका ही अधिकार।
चारों ओर मचा है हाहाकार।"[73]

इसप्रकार विषय के सीधे-सादे प्रतिपादन के समय कवि ने परिचयातमक शैली का सफल प्रयोग किया है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि "भूमिजा" काव्य की भाषा सर्वथा संयत और सुष्ठु है। वह साहित्यिक, परिष्कृत और प्रांजल खडीबोली का रूप लेकर आई है। नागार्जुनजी की भाषा के संबंध में हम यह कह सकते हैं कि उनकी हिंदी पूर्णतः संस्कृतनिष्ठ, तत्समप्रधान और एकरस है। उनकी भाषा

भावानुकूल, चित्रात्मक तथा वक्तात्मक रूप लेकर हमारे सामने आयी है। उसमें कृत्रिमता और आडंबर नहीं, सहजता और स्वाभाविकता हैं।

6· **प्रतीक विधान :-**

प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य वस्तु के लिए किया जाता हैं जो किसी अदृश्य विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है।"[74] अर्थात किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तुद्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करनेवाली वस्तु प्रतीक है। "वस्तुतः प्रतीक शब्द के कई अर्थ माने जाते है ओर शब्द मात्र ही प्रतीक है तथा भाषा का प्रयोग ही प्रतीकात्मक है। साहित्य जगत् में प्रतोक कुछ विशिष्ट अर्थ रखता है। जब किसी शब्द के प्रचलित अभिधेय अर्थ को ग्रहण करते हुए भो उसके द्वारा किसी अन्य अर्थ की सूचना दी जाय तब उसे प्रतीक कहा जाता है। उदा· सिंह - साहस और शौर्य का , सांप -क्रूरता और कुटिता तथा भेड कायरता तथा दीनता का प्रतीक माना जाता है।

प्रतीक जीवन में व्यवहार के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। वस्तुतः मनुष्यमात्र का स्वभाव है कि वह अपने प्रबल भावों की अभिव्यक्ति के लिए सदा लालायित रहता है। हमारे चेतन मन के भीतर जो उथल-पुथल मच जाती है वही संकेतो, प्रतीकों के माध्यम से प्रकट होती है।

काव्य में प्रतीकों का प्रयोग नयी अभिव्यंजना शक्ति, अर्थ सोष्ठव और लाक्षणिक विशिष्टता लाने के लिए जाता है - डॉ·भगीरथ मिश्र के शब्दों में, "अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी किसी अप्रस्तुत भाव, वस्तुविचार, क्रिया-कलाप, देश, जाति-संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलता हैं।"[75]

साधारण तौरपर प्रतीकों द्वारा अप्रस्तुत वस्तुओं का बोध कराया जाता है। खंडकाव्य में प्रतीकों की सहाय्यता से किसी समस्याको प्रकट किया जाता है। नागार्जुन की काव्य-कृति "भूमिजा" में भी प्रतीक योजना का सफल निर्वाह हुआ है, ऐसा मुझे लगता हैं।

"भूमिजा" की कथावस्तु में नागार्जुन ने रामायण की कथा के एक महत्वपूर्ण अंश को लेकर उसकी घटनांओ ओर पात्रों की प्रतीकात्मक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए मानव जीवन के कुछ शाश्वत मूल्यों को उजागर करने का तथा अपना अध्यात्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं।

सीता को कविने यहाँ भूमि का प्रतीक बतलाया है। जिस तरह धरती अपनी कोख में सब दुःखों को समये रहती हैं, उसी तरह सीता ने अपने मन में बहुतसे दुःखों को, पीडा को छूपाया हैं। लेकिन जब उनकी अत्याधिकता और असध्यता होती है, तब उसी भूमि में दरारे पड जाती है और उसमें सीता समा जाती है।

सीता कहती है -

"भूमि से निकले, समाएँये वहीं,
और भला जाएँगे हम क्या कहीं,
वही हे माता, बस वही है पिता
वही है आसन वही है चिता।"[76]

राम यहा मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में सामने आ जाते हैं। उन्हें तो सूर्य का प्रताक माना गया है। महाराज रघु के कुल मे जन्म लेनेवाले कमल स्वरूप व्यक्तियों को उत्फुल करनेवाले दिवाकर याने राम है। जैसे -

"सरयू के सकेत तट पर आसीन
बोले रघुकुल कमल दिवाकर राम।"[77]

महाराज दशरथ के राज में सब लोग सुखी एवं स्वस्थ है। कोसल देश की भूमि खुशहाली एवं प्यार का प्रतीक है। इसका बहुत ही सुंदर वर्णन निम्न पंक्तियों में देखने को मिलता है -

राम कहते है -

"कहा मिलेगा ऐसा सुंदर देश?
धन्य हमारा कोसल जनपद धन्य।
सुजल सुफल बहुविध धनधान्य समेत।
लता - गुल्म - तृण - तरू - वल्ली परिव्याप्त।
सरयूजल अभिसिंचित स्फीत समृध्द।
सुर - नर - मुनि मनमोहन परम ललाम।"[78]

"हिमगिरी की गोद" याने गंगा नदी को कविने तीन प्रकार के ताप को मिटानेवाली माँ की गोद का प्रतीक माना है। गंगा के जलकण का स्पर्श पाकर युग-युग के पाप कट जाते हैं। राम ने गंगाजी की महिमा इस प्रकार वर्णित की है ....

"त्रिविध तपाहरिणि गंगे, तुम धन्य।
देवि तुम्हारी महिमा अपरम्पार ।
पाकर तेरे जलकण का संस्पर्श।
कट जाते हैं युग-युग-संचित पाप।
हट जाते हैं बडे-बडे अभिशाप।"[79]

सीता द्वारा नये युग की तथा युग परिवर्तन की कल्पना कवि की अपने व्यक्तिगत भाव बोध का प्रतीक है जिनका संबंध कवि की निजी अनुभूति ओर प्रेरणा से है। जैसे -

"सोच रही हूँ, कब होगा वह कल्प
वह मन्वन्तर, युगारम्भ का दौर

सोच रही हूँ, परिवर्तित वह काल
कैसा होगा, क्या होगी युग-रीति
एक-एक जन बोलेगा जब सत्य
जब न प्रवादों पर नृप देगे ध्यान।"[80]

नागार्जुन के काव्य में व्यक्तिगत भावना पूर्ण रूप से विकसित हो गयी है। कवि बताना चाहते है कि आज के बदलते परिवेश में यदि कोई शासक-राजा पति, पत्नी के चरित्र पर, पावनता पर बिना सोचे समझे लांच्छनास्पद आरोप, उसका शोषण करे या अविश्वास करे तो आज की नारी भी सीता का रूप लेकर उस शोषण से मुक्त होकर अपने स्वाभिमान, आत्मगौरव की रक्षा करेगी। जैसे नागार्जुन की सीता ने किया था

"पहले उमडी थी फेनिल जलराशि
मटमैली आभामय चारों आर
हुए विदीर्ण धरा के कोमल वक्ष
कई क्षणों तक गूँज् गया आकाश
आसान - सहित हुई वह अन्तर्लीन
भूमि-गर्भ में समा गयी स्वयमेव
यह तो था उसका इच्छा अवसान
फटी दरारें जुडी आप से आप····"[81]

इस प्रकार कवि ने व्यक्तिगत प्रतीकों को अपनाकर अपनी अभिव्यक्ति को आकर्षक बनाया है।

जो प्रतीक धर्म और संस्कृति से गृहित किए जाते है, वह सांस्कृतिक प्रतीक कहलाते है। नागार्जुन ने सांस्कृतिक प्रतीको का प्रयोग बडी सफलता एवं सजीवता के साथ किया है। जैसे -

"अटे पडे हों घर-घर में धन-धान्य
स्वर्ण - रजत की लगी हुई हो ढेर
प्रभुता भी हो, यौवन भी हो किन्तु
जन मन को चाहिए ज्ञान का दीप,
सोच रही हूँ, कब होगा वह कल्प?"[82]

"भूमिजा" की संपूर्ण कथावस्तु पौराणिक कथा रामायण से ली है, इसलिए इसमें पौराणिक प्रतीकों की भरमार है। कविवर नागार्जुन ने इन प्रतीकों का प्रयोग करके चमत्कार उत्पन्न किया है। जैसे -

"सरयू उद्गम तव सुरसरि महात्म्य
किस प्रकार गंगाजी की यह धार
भू पर उतरी, तज हिमगिरि की गोद?
किस प्रकार पा सके परम पद, हंत,
कपिल - कोप - परिदग्ध, सगर - सन्तान?
भगीरथी पडा क्यो इसका नाम?"[83]

कवि नागार्जुनजी प्रयोगवादी कवि के रूप में भी उभरकर हमारे सामने आये हैं। कवि ने रूप योजना और नयी कल्पनाओं के आयोजन में प्रकृति वर्ग के प्रतीकों का प्रयोग किया है। जैसे -

"नहीं मिलेगी ऐसी उर्वर भूमि -
नही मिलेगा ऐसा सुंदर देश -
कहीं चराचर किंवा त्रिभुवन मध्य,
ऐसी मिट्टी नहीं मिलेगी तात।
धन्य हमारा कोसल जनपद धन्य।"[84]

प्रभू रामचंद्र ने प्रजा का कहना मानकर सीता के पक्ष में एकपक्षीय न्याय देकर सीता का अपमान किया। उसके चरित्र का तथा उसके एक पतिव्रता का अपमान किया है। सीता नारी के मनस्वी स्वाभिमान का प्रतीक है। सीता ने रघुकुल के एकपक्षीय मर्यादा और न्याय की कडी आलोचना कर अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए खुद को धरती माता के हवाले किया है। जैसे -

"भूमि-सुता तो होगी केवल एक
एक बार ही होगा अन्तर्धान
सूर्य वंश की किसी बहू का आज
मेरी जननी लेगी मुझे समेट
पाऊंगी मैं माँ की शीतल गोद।"[85]

इसतरह कविने "भूमिजा" में सीता को दहनशक्ति का प्रतीक माना है।

कवि नागार्जुनजी ने अपने सफल खंडकाव्य "भूमिजा" में कई प्रकार के प्रतीकों का सफलता से निर्वाह किया है। व्यक्तिगत प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, प्राकृतिक प्रतीक आदि कई प्रकार के प्रतीकों के प्रयोग से "भूमिजा" खंडकाव्य सजाया है। इन प्रतीकों के माध्यम से कवि आधुनिक समस्याओं को व्यक्त करने में बहुत सफल रहे हैं। सारांश में कवि नागार्जुनजी को प्रस्तुत कृति की प्रतीक योजना में पर्याप्त सफलता मिली है।

7· **बिम्ब विधान :-**

हिन्दी में काव्य-बिम्ब की अवधारणा, प्रतीक की भाँति मूलतः आधुनिक युग की देन है। आधुनिक चिंतन में प्रयुक्त "बिम्ब" शब्द अंग्रेजी के "इमेज" का पर्याय है। हिन्दी का बिम्ब विधान भी आधुनिक पश्चिमी-काव्यशास्त्र के बिम्ब विवेचन से प्रभावित है। किंतु हिन्दी में बिम्ब विवेचन के दो पक्ष हैं -

1· बिम्ब प्रक्रिया के अधिक से अधिक वर्गीकरण

2· भारतीय काव्यशास्त्र में बिम्ब परंपरा की खोज।

इसके अतिरिक्त नये कवियों ने एक अन्य पक्ष भी प्रस्तुत किया है। वह है - शिल्प में तत्व में के रूप में बिम्ब का महत्व प्रतिपादित करना।

बिम्ब कविता का प्राणतत्व है। इसका निर्माण कल्पना के सहयोग से होता है। वस्तुतः बिम्ब कल्पना स्मृति की वह क्रिया है जो शब्दों के द्वारा चित्र प्रस्तुत करती है। कई बार तो बिम्ब सीधी, सरल शब्दावली द्वारा खडे किए जाते है। तो कई बार अलंकृति द्वारा। किंतु सर्वाधिक सफल बिम्ब वे होते हैं जो ऐन्द्रिय संवेदनाओं द्वारा खडे किए जाते हैं। बिम्ब एक ऐसा शब्दचित्र है जिसमें अलंकृति स्पर्श और भाववेगमयी कल्पना होती है। नागार्जुनजी के बिम्बों में ताजगी, सरलता और चुटीलापन है और वे स्मृति के सहारे खडे किए गए है।

डा·आदित्य प्रसाद तिवारी बिम्बात्मक भाषा के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखते है - "सामाजिक के चित्र को अनुगुंजित करनेवाली बिम्बात्मक भाषा ही काव्य को अनुभूति ·प्रवण संप्रेषणीय और जानदार बनाती है। सपाट बयानी भाषा काव्य के लिए असरदार साबित नही होती। जो कवि जितना कल्पनाप्रवण और अनुभव संपन्न होता है। प्रभावशाली बिम्बों की योजना में वह उतना ही कामयाब होता है। बिम्ब कवि के यथार्थ बोध और उसकी समसामायिक चेतना के वाहक होते है।"[86] कवि नागार्जुन की बिम्ब योजना, विविध रूपी और बहुआयामी है। प्रतीकात्मक और मुहावरा परक बिम्बों के निर्माण में वे विशेष रूप से रमें है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों से भी वे अपने बिम्ब संयोजित कर लेते है।

नागार्जुन एक सिध्दहस्त कवि है। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को अधिकाधिक मार्मिक एवं मनोरंजक बनाने के लिए जहाँ विविध प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया है, वहाँ अपनी उक्तियों को गुरूता, गंभीरता, कमनीयता, अलौकिकता एवं मधुरता प्रदान करने के लिए विविध प्रकार के बिम्बों का प्रयोग अत्यंत सफलता

एवं सजीवता के साथ किया हैं। मतलब बिम्बों के क्षेत्र में नागार्जुनजी अपना विशिष्ट एव महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

ऐंद्रिय बिंब :-

इसके अंतर्गत कवि ने निम्न बिम्बों का प्रयोग बडी सफला से किया हैं।

दृश्य बिंब :-

कवि नागार्जुनजी ने देखा कि औरत पवित्र एवं सच्ची होती है। उससे ही पुरूषो का निर्माण होता है। ऐसी औरत को पुरूषो से ही बचकर रहना पड़ता है।अगर अनजाने में ही उससे कोई भुल हो जाती है तो उसे बहुत बडी सजा मिलती है। जैसी अहल्या को मिल गयी थी। दृश्य बिम्ब के द्वारा कवि लिखते है -

"यही कहीं होंगे मुनि भी हे राम।
दिया उन्हीं ने मुझको यह अभिशाप,
परनर दूषित, पुंश्चलि, तेरी देह,
हो जाये निस्पंद कुलेश-पाषाण।"
किंतु वस्त, तेरे शिर पर रख हाथ
सत्य-सत्य कहती हूँ, परमोदार।
साक्षी पृथ्वी - साक्षी है आकाश
हुई नहीं सम्पृक्त किसी के सासथ
कभी अहल्या अपने पति को छोड।"[87]

वस्तुपरक बिम्ब :-

इन बिम्बों के अंतर्गत कवि ने मानव और प्रकृति सम्बन्धी विविध बिम्बों का विधान किया है। वस्तुपरक बिम्ब के काफी प्रकार होते है। सर्वप्रथम उन्हें दो भागों में विभाजित किया जाता है - मानव संबंधी और प्रकृति संबंधी।

मानव संबंधी बिम्बों के अंतर्गत रूप सौंदर्यगत, सामाजिक, राजनितिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, यौन संबंधी, वैज्ञानिक आदि प्रकार आते हैं।

प्रकृति संबंधी बिम्बों में जड प्रकृति संबंधो, चेतन प्रकृति संबंधी, प्रतीकात्मक आदि प्रकार आते हैं।

अ· राजनीतिक बिम्ब :-

"महाराज वह दशरथ भी है धन्य
तुमसे उज्वल होगा उनका नाम
धन्य अयोध्या है ही महाउदार,
पाया जिसने तुम-सा राजकुमार
युग-युग जियो दयालु, दीन जनबंधु
होगी तुमसे प्रजा यथार्थ सनाथ···"[88]

2· "कहा राम ने होकर परम विनीत
कोसलेश दशरथ के हम हैं पुत्र,
राम-लखन-से साधारण है नाम
किया राक्षसों ने भीषण उत्पात,
पूर्णाहुति तक पहुँच न पाये यज्ञ -
उन दुष्टों का ही करने संहार
महाराज से हमको लाये माँग
गाधिपुत्र कौशिक मुनि विश्वामित्र।"[89]

ब· सांस्कृतिक बिम्ब :-

सांस्कृतिक बिम्ब अपनी निजी विशेषता रखते हैं। इनमें किसी व्यापार को स्पष्ट करने के लिए सांस्कृतिक क्रिया-कलापों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। इन सांस्कृतिक बिम्बों का प्रभाव बडा ही पावन और उदात्त होता है। यह प्रसन्न बिम्ब एक स्वस्थ वातावरण प्रस्तुत करते है। जैसे -

"नीरज नील निरभ्र परम रमणीय-
ज्यों हो शरद प्रकृति का विजय-वितान
सडी घास की, सडे पात की गन्ध,
अधसूखे कर्दम की गीली बास,
ध्यान खींच लाती है भू पर ओह।"[90]

क· <u>सामाजिक बिम्ब :-</u>

नागार्जुनजी के काव्य में बहुतसे सामाजिक बिम्बों का भी प्रयोग हुआ है। सामाजिक बिम्ब भी अपनी निजी विशेषता रखते हैं। इसमें सामाजिक क्रिया कलापों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं।

"भूमिजा" के सामाजिक बिम्ब इस प्रकार है -

1· "याद आ रहे मुझको बारंबार,
वृध्द पिता के सजल स्निग्ध वे नेत्र।
शिशिर, निशा के हिमाच्छन शशितुल्य
माताओं के मुँह आते हैं याद।
विदाकाल के वे मर्मान्तिक दृश्य
भूल गए है हम जो इतना शीघ्र।"[91]

2· "आतंकित खगमृग कृमि कीट भुजंग
दूर-दूर ही रहे, न फटके पास
सिरज गई सीता अभिनव इतिहास
धरती पर खडा था कल्पना पुत्र
रूक न रहा था अविरल अश्रु-प्रवाह
प्रतनुजला तमसा कैसे तो, ओह,
प्रशमित कर पाएगी अन्तर्दाह।"[92]

<u>प्राकृतिक बिम्ब :-</u>

इसके अंतर्गत प्रकृति के विभिन्न उपकरणों से सौंदर्य प्रस्तुत किया जाता है। निम्न बिम्ब देखिए -

"तपोभूमि का यह संरक्षित रूप
हो जाएगा अब निश्चित ही लुप्त
खग-मृग सारे ही होंगे स्वच्छंद
खुली प्रकृति होगी अनुशासनहीन
ऋतुओं का स्थापित होगा फिर राज्य
कहीं नही दीखेंगे पर्ण - कुटीर
सूझ - समन्वित श्रम का कोई चिन्ह
शेष न होगा। होगा प्राकृत दृश्य।"[93]

भाव बिम्ब भी अनेक प्रकार के होते हैं। इस बिम्ब में दृश्य पक्ष उतना स्पष्ट नहीं होता है जितना की भावपक्ष। अपने गढ़न और गुणों के कारण भाव बिम्ब धुंधला, और अनुभूति या संवेदना - प्रधान होता है। इसमें सुख दुःख, आशा-निराशा, विरह-मिलन, का भावात्मक चित्र उपस्थित किया जाता है।

नागार्जुन के भूमिजा में भाव बिम्ब काफी मात्रा में पाये जाते है। उदा· वेदना का बिम्ब :-

"एक बूंद, दो बूंद, चार - छै बूंद
उतर रहा थ इतना भर ही दूध
सूख गये थे वत्सलता के स्त्रोत
भूल गई थी कोमलता का नाम
कैसे - कैसे ये जुडवाँ नवजात
अनुप्राणित रह गए प्रसव के बाद

करूणा-विगलित तापसियों के मध्य
हुआ भरण-पोषण इनका किस भाँति
सारी बाते आती है मुझको याद।"[94]

इस प्रकार शुध्द बिम्बों का प्रयोग हुआ है। जिसके अंतर्गत सेवा, लालसा, अभिलाषा, उदासी, प्रेरणा से संबंधी बिम्ब आए है। कवि नागार्जुन ने भाव बिम्बों का प्रयोग करके अपने खंडकाव्य को सरस बनाया है।

आकांक्षा, लालसा, दंभ और प्रेरणा का बिम्ब -

"तरूण तपस्वी का, प्रिय दर्शन रूप,
सचमुच क्या ऐसा होता है, ओह।
लगी सोचने त्रिजटा बारंवार -
ऐसा ही मुख, यही साँवला रूप -
तरूणाई में दिखते होंगे राम
इसी छटा में कौशिक ऋषि के पास
धो देगा वह अपनी माँ की ग्लानी
कर देगा वह उस प्रवाद का अन्त
लगी सोचने त्रिजटा बारंबार।"[95]

नागार्जुनजी ने व्यक्ति स्वप्न में अपने आधुनिक विचार एवं इच्छांओ को अभिव्यक्त किया है। कवि ने स्वप्न में जो देखा है। वास्तव रूप में इस धरती पर लाना चाहते है। उनका यह विचार उनमें छिपी एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार की सोच है। यहाँ त्रिजटा ने जो स्वप्न देखा है वह भविष्य की सोच है। जैसे -

"लगी सोचने त्रिजटा बारंबार -
जनकनन्दनी लौटेगी साकेत

आएँगे लक्ष्मण त्रुटि मार्जन हेतु
विनत बदन, श्रीराम रहेंगे मौन
यमज सुतों पर बरसेगी आशीष
छीटेंगे कुलगुरू अक्षात औ दूब
उत्सव में उत्तराएगा साकेत
सरयू - तट पर गूँजेगा संगीत
रघुकुल - कीर्ति - कथा के सौ-सौ छन्द
मुखरित होंगे वीणा में दिन-रात
यमज कुमारों का होगा अभिषेक
यही बनेगा तब शायद युवराज।"[96]

इसप्रकार नागार्जुन के काव्य में अनेक प्रकार के बिम्ब मिलते है। इसका प्रधान कारण है कवि की रोमनी दृष्टि। कवि नागार्जुन के यह बिम्ब भाषा को अपूर्व शक्ति और व्यंजकता प्रदान करते है।

8· **जनभाषा का प्रयोग :-**

नागार्जुन संस्कृत के महापंडित है, साथ ही वे भारत की दर्जनो भाषाएँ जानते है। भाव के अनुसार भाषा और शब्दों को चुनने में एकमात्र जनकवि है। सर्वहारी जनता, किसान, मजदूर, निम्न मध्य वर्ग के लोग जिस भाषा को आसानी से समझ सकते है। उसका परिष्कृत रूप इनकी कवितांओ में दिखाई देता है। जो ठेठ जन जीवन ओर जीवन्त लोक धर्म का संवाहक है।

कवि ने काव्य भाषा में उत्तर भारत की आँचलिक बेलियों के शब्दों का प्रयोग भी किया है। उनके काव्य की भाषा सहज व्यवहार और आम जन जीवन की भाषा है।

सच्चा कवि अपने परिवेश से जुडा रहता है। समूचे संदर्भ अपने समाज से उसे मिलते है। अपनी मिट्टी की गंध सामान्य जनता की शब्दावली में मुखरित

होना स्वाभाविक है। नागार्जुन ने जो जनभाषा अपने जीवन्त संसार से प्राप्त की हैं वही उनकी साहित्यिक भाषा बन गई है। इस जनभाषा का भी अपना एक सौंदर्याशास्त्र है जो "जड सौंदर्यशास्त्र" से पूर्णतः भिन्न है।

कवि नागार्जुन ने अपने खंडकाव्य "भूमिजा" में जीवन्त भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा कही संस्कृतनिष्ठ तो कही सीधी-सादी देहाती हैं।

जैसे -

"कहाँ मिलेगी ऐसी उर्वर भूमि?
कहाँ मिलेगा इतना सुंदर देश?
ऐसी माटी कहाँ मिलेगी वत्स।"[97]

उसी तरह -

बताया था धाई ने मुझे -
जनकपूर में ही वारम्बार -
नहीं है तू इनकी संतान
पिता है तेरे तो भगवान
भूमि - पुत्री है तू साक्षात,
खुला ठक्कन जब दो दिन बाद
घडे से निकली थी, ओह।
बताया था धाइ, ने मुझे
वहीं, बचपन में दयियों बार।"[98]

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में ठेठ जनभाषा का प्रयोग हुआ है। इसी तरह "भूमिजा" में नागार्जुन ने तात, सीमान्त, शूर, कटि, मध्यान्होत्तर, वत्स, हन्त, धन-धान्य, तरू, नर, उर्वर, चराचर, त्रिभुवन, तथ्य, मर्मान्तिक, अविरत, साक्षी, रमणी, वृत्तान्त, दुर्गम, संशये, धन्वन्तरि, पदत्राण आदि बहुत सारे

आँचलिक शब्दों का प्रयोग कर अपना खंडकाव्य स्थानीय रंग से रंजित करने का सुंदर एवं सजीव प्रयोग किया है। कवि ने जीवन व्यवहार की भाषा से खंडकाव्य को एक नवीन शक्ति प्रदान की है।

यहाँ मूल आशय बोलचाल के शब्दों को अपनाने तक सीमित नही हैं, बल्कि आज के जीवन की लय को, उसकी धडकन को अपनाने का सफल प्रयोग है। नागार्जुन "भूमिजा" में जनभाषा का प्रयोग करने में बहुत ही सफल हुए हैं।

प्रसंग योजना :-

खंडकाव्य में सर्गबध्दता के नियम में शिथिलता होती है। खंडकाव्य का वस्तुविस्तार सीमित होता है, वह एक घटना पर आधारित होता है। इसलिए उसके वर्गीकरण को विद्वानोंने आवश्यक माना है। इस दृष्टि से देखा जाए तो कविवर नागार्जुन ने "भूमिजा" खंडकाव्य की कथावस्तु को तीन प्रसंगो में याने तीन सर्गो में विभाजित किया है। उसे एक, दो और तीन इस क्रम में दिए है।

भूमिजा में वास्तव में पाँच अलग प्रसंग है, जो कि रामायण से लिए गये है। उन्हें ही कथा संगठन में तीन प्रसंगों में विभाजित किया है। ये प्रसंग इसप्रकार हैं - पहला प्रसंग - महर्षि विश्वामित्र द्वारा रचित महायज्ञ के रक्षार्थ राम लक्ष्मण का वनगमन। दूसरा प्रसंग - अहलया उद्धार का है। तिसरे प्रसंग में अन्य दो उपप्रसंग भी आये है वे है - राम द्वारा सीता का त्याग तथा सीता की व्यंग्यपूर्ण आलोचना, लव-कुश के विकास तथा उनके उज्वल भविष्य का जो कि त्रिजटा ने देखा है और अंत में महाकवि वाल्मीकि द्वारा रामकथा का उपसंहार तथा सीता के बिना अकेलेपन का एहसास है। इन प्रसंगों को बडे ही स्वाभाविक शब्दावली में नागार्जुन ने उभारा है। संपूर्ण "भूमिजा" की कथा में इन प्रसंगों के विभाजन से गतिशीलता, रोचकता, प्रभावोत्पादकता आकर विषाद का चित्रण बहुत सुंदर ढंग से हुआ है। इसप्रकार "भूमिजा" के सर्ग योजना की सफलता का श्रेय कविवर नागार्जुनजी को निस्संदेह मिलता है।

उपसंहार :-

शिल्पविधान की प्रौढता की दृष्टि से नागार्जुन का "भूमिजा" खंडकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। "भूमिजा" की भाषा संस्कृतनिष्ठ होने पर भी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में सफल रही है। नागार्जुनने नूतन युग के अनुरूप जिस काव्यात्मक भाषा को स्वीकृत किया है, उससे आधुनिक मानव जीवन की संवेदना को ग्रहण करते हुए मानवता की प्रतिष्ठा की है। कवि ने चर्चित पौराणिक कथा को एक नये अध्यात्मिक दृष्टिकोन के साथ प्रस्तुत किया है। कवि के भाव, विचार पक्ष की तरह शिल्प-कला पक्ष भी विकासशील हैं। नागार्जुन के काव्य में प्रतीकों की विशेषता है। पात्र प्रतीकों के साथ ही कवि ने शब्द प्रतीकों का भी सफल रूप से प्रयोग किया है। नागार्जुन ने बिम्ब विधान के अंतर्गत अनेक वस्तुओं के रूप, गंध, ध्वनि आदि का सजीव अंकन किया है। कवि ने अलंकारो का भी सफल प्रयोग किया है जो अपनी सहजता और स्वाभाविकता के कारण कथ्य के सौंदर्य और प्रभाव को बढ़ाता है। उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकारों का प्रयोग कवि ने स्वाभाविक रूप से किया है। इसके साथ ही जनभाषा का यथार्थ प्रयोग, मुहावरों लोकोक्तियों आदि के द्वारा नये शिल्प का निर्माण करके अपनी प्रतिभा, व्यक्तित्व का परिचय दिया है। चिरपरिचित छंद योजना द्वारा काव्य की प्रभावोत्पादकता बढ़ाने मे कवि पूर्णतः सफल हुए हैं।

संक्षेप में हम निस्संदेह रूप में कह सकते है कि, कविवर नागार्जुन को "भूमिजा" खंडकाव्य के शिल्पविधान मे उच्च कोटि की सफलता मिली है।

<u>संदर्भ सूची</u>

1·	भूमिजा	-	नागार्जुन पृ·34 सं·1995
2·	वही	-	पृ·34
3·	वही	-	पृ·36
4·	वही	-	पृ·37
5·	वही	-	पृ·38
6·	वही	-	पृ·39
7·	वही	-	पृ·39
8·	वही	-	पृ·40
9·	वही	-	पृ·40
10·	वही	-	पृ·41
11·	वही	-	पृ·41
12·	वही	-	पृ·60
13·	वही	-	पृ·42
14·	वही	-	पृ·44
15·	वही	-	पृ·46
16·	वही	-	पृ·47
17·	वही	-	पृ·48
18·	वही	-	पृ·48
19·	वही	-	पृ·51
20·	वही	-	पृ·57
21·	वही	-	पृ·72
22·	वही	-	पृ·38
23·	वही	-	पृ·39
24·	वही	-	पृ·74

25· वही - पृ·52

26· वही - पृ·47

27· वही - पृ·60

28· वही - पृ·53

29· वही - पृ·47

30· वही - पृ·74

31· वही - पृ·76

32· वही - पृ·36

33· वही - पृ·37

34· वही - पृ·38

35· वही - पृ·46

36· वही - पृ·50

37· वही - पृ·51

38· वही - पृ·69

39· वही - पृ·73

40· वही - पृ·44

41· वही - पृ·38

42· वही - पृ·37

43· वही - पृ·37

44· वही - पृ·48

45· वही - पृ·48

46· वही - पृ·41

47· वही - पृ·47

48· वही - पृ·45

49· वही - पृ·70

50· वही - पृ·73

51· वही - पृ·59

52· वही - पृ·73

53· वही - पृ·76

54· वही - पृ·52

55· वही - पृ·61

56· वही - पृ·56

57· वही - पृ·36

58· वही - पृ·63

59· वही - पृ·41

60· वही - पृ·45

61· वही - पृ·70

62· वही - पृ·33

63· वही - पृ·36

64· वही - पृ·36

65· वही - पृ·40

66· वही - पृ·52

67· वही - पृ·73

68· वही - पृ·59

69· वही - पृ·52

70· वही - पृ·46

71· वही - पृ·40

72· वही - पृ·49

73· वही - पृ·43

74· हिन्दी साहित्य कोश भाग 1 - डॉ·धीरेंद्र वर्मा
पृ·515

75·	काव्यशास्त्र	-	डा·भगीरथ मिश्र विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी 221 001, एकादश संस्करण, 1994 पृ·294
76	नागार्जुन	-	भूमिजा , पृ·59
77·	वही	-	पृ·33
78·	वही	-	पृ·34
79·	वही	-	पृ·39
80·	वही	-	पृ·66
81·	वही	-	पृ·74
82·	वही	-	पृ·67
83·	वही	-	पृ·37
84·	वही	-	पृ·35
85·	वही	-	पृ·66
86·	कविता के आसपास	-	मुलचंद सेठिया, पृ·110, श्याम प्रकाशन, फिल्म कालोनी जयपुर 302003, प्र·सं·1992
87·	भूमिजा	-	नागार्जुन, पृ·51
88·	वही	-	पृ·58
89·	वही	-	50
90·	वही	-	पृ·40
91·	वही	-	पृ·36
92·	वही	-	पृ·74
93·	वही	-	पृ·77
94·	वही	-	पृ·68
95·	वही	-	पृ·71

96. वही - पृ. 72

97. वही - पृ. 34

98. वही - पृ. 61